क़ुरान की—

छान बीन

लेखक :—

श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ।

चतुर्थबार १०००] १९२५ [मूल्य ।-)

* ओ३म् *

क़ुरान

की

छान बीन

प्रथम भाग

प्यारे भ्रातृगण !

मुसलमानी सिद्धान्तों पर जहां तक विचार किया जाता है तो यही बतलाया जाता है कि क़ुरानशरीफ़ कलामइलाही–"ईश्वरीय वाक्य" है। परन्तु क़ुरआन की बनावट पर ध्यान देने से नितान्त ही उसके विरुद्ध पाया जाता है। क्योंकि प्रथम तो क़ुरआन उतरने पर ही शंका उत्पन्न होती है। कि क़ुरआन एक ही बार में सम्पूर्ण उतरा वा थोड़ा २ करके ? यदि यह माना जावे कि क़ुरआन एक बार में सबका सब उतारा गया तो

उसका खण्डन क़ुरआन से ही होता है; क्योंकि हर एक *सूरत के ऊपर लिखा है कि यह सूरत मक्के में उतरी, यह मदीने में उतरी और यह अन्य अमुक २ स्थान पर उतरी। ऐसी अवस्था में उनका एक ही स्थान पर और एक ही वार उतरना कैसे मान सकते हैं? यदि यह मान लें कि क़ुरआन पृथक् २ आयतों में जैसा कि हमारे मुसलमान भाई मानते हैं उतरा तो उसका खण्डन भी क़ुरआन की आयतों से होता है।

देखो क़ुरआन सिपारः २५।

वल् किताबिल् मवीने इन्ना अन्ज़ल्नाहो फ़ी लैलतिम् मुबारकातिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़रीन्॥

अर्थ—शपथ (क़सम) है किताब बयान करने वाले की निश्चय उतारा हमने उसको (क़ुरान को) बीच रात बरकत वाली के निश्चय हम हैं डराने वाले।

पाठकगण! जब कि ख़ुदा क़सम खाकर इस बात को प्रकाशित करता है कि जब उसने क़ुरान को "बरकत वाली" रात में उतारा, तो इसके विरुद्ध समझना खुल्लम खुल्ला ख़ुदा को भी असत्यवादी कहना है। ख़ुदा की बातको क़सम खाने पर भी विश्वास के योग्य न समझना है हम द्विविधा में हैं कि इन दो परस्पर विरुद्ध बातों में

* यह शब्द संस्कृत के "सूत्र" शब्द से बनाया है।

से, कि ख़ुदा ने क़ुरान को एक साथ ही उतारा वा पृथक् २ उतारा, किसको सत्य मानें? जबकि इस बात पर ध्यान आता है कि क़ुरान की प्रत्येक सूरत पर जो कुछ लिखा है वह सत्य है तो तत्काल ही विचार उत्पन्न होता है कि जिस बात को ख़ुदा क़सम खाकर बताता है वह कैसे झूंठ हो सकता है? दूसरे, यह भी सन्देह उत्पन्न होता है कि क़ुरान की सूरतों के ऊपर जो कुछ लिखा है, वह ख़ुदा का वाक्य है वा क़ुरान के संग्रह करने वाले का है? यदि यह मानें की मक्के और मदीने में उतरना भी ख़ुदा की ओर से है उस समय किसी बात को भी ठीक मानना कठिन प्रतीत होता है। यदि यह माना जावे कि, यह आयत मक्के में उतरी, यह क़ुरान के इकट्ठा करने वाले ने लिखा है तो क़ुरान में मिलावट होने का सन्देह होता है। प्रत्येक दशा में क़ुरान का इलहाम होना ऐसा ही असम्भव है जैसे की अन्धेरी रात को दिन सिद्ध करना। इसके अतिरिक्त क़ुरान के एक रात में उतरने के और बहुत से प्रमाण हैं।

देखो क़ुरान सिपारः ३० सूरतुल क़दर।

इन्ना अञ्ज़ल्नाहो फी लैलतिल् क़दर।

अर्थ—निश्चय उतारा मैंने क़ुरान को बीत रात क़दर के।

आयत २ लैलतुलक़द्र खैरूमिन अल्फ़े शहर। अर्थात् रात की कद्र बेहतर है हज़ार मास से ।

आयत ३--तंनज्ज़लुल् मलायकतो वर्रूहो फ़ीहा बे इज़्ने रब्बाहिम् मिन् कुल्ले अमरिन् सलामुन् हेय हत्ता मतलइल् फ़जर ।

अर्थात्—उतरते हैं फ़रिश्ते और अरवाह पाक (पवित्रात्माएँ) हैं उसके साथ हुक्म परवरदिगार अपने के वास्ते हर काम के। इसी प्रकार के और बहुत से प्रमाण मिलते हैं, जिनसे विदित होता है कि क़ुरान का ईश्वरीय वाक्य होना तो दूर रहा, किन्तु यह किसी विद्वान का भी वाक्य नहीं हो सकता, क़ुरान की आयतों में विरोध के कारण और कतिपय बुद्धि विरुद्ध बातों के कारण और ईश्वर की निन्दा करने से, जिसकी स्तुति और प्रार्थना के लिये, मुसलमानों के कथनानुसार, उतरा है स्पष्ट ज्ञात होता है कि क़ुरान बनाने वाला कोई अरब के रहने वाला है और अपनी भाषा सुन्दरतासे बोलने वाला है। क़ुरान में भाषा सौन्दर्य के अतिरिक्त और कोई विद्या की बात नहीं है कि जो उसके उतरने से पहिले विद्यमान न हो क़ुरान के कर्त्ता ने दावा भी उसी बात का किया है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी एक सूरत बना लाओ। इस दावे से तो यह सिद्ध होता है कि उस

समय में मुहम्मद साहब बड़ी सुन्दर भाषा में बोलने वाले थे। हमारे मुसलमान दोस्तोंने हज़रत मुहम्मद साहबको, जो हमारे विचार में कुरान के कर्त्ता हैं उम्मी (बेपढ़ा) सिद्ध किया है। परन्तु उनके इस कथन से कुरान को ईश्वरीय वाक्य नहीं कहा जा सकता। क्योंकि हज़रत अरबी भाषा से भले प्रकार परिचित थे। जिस प्रकार आज कल के देहली और लखनऊ के मूर्ख निवासी भी सुन्दर भाषा बोल सकते हैं। इस बात में और शहरों के साधारण पढ़े लिखे भी उनकी बराबरी नहीं कर सकते। फिर मुहम्मद साहब जो अरब के सबसे बड़े शहर मक्का में पैदा हुए थे। जिनके मां बाप बड़े मक्के के मन्दिर के पुजारी थे, और जिनको हर समय ऐसे मनुष्यों से बोलने का काम पड़ता था जो वहां प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित गिने जाते थे। ऐसी अवस्था में सुन्दर भाषा का बोलना कोई मौजज़ः (चमत्कार) नहीं हो सकता। जिन मनुष्यों ने पञ्जाब की एक कहानी-हीरा और रांझा का किस्सा, जिसको वारिस शाह ने बनाया है, पढ़ा है वे बतलाते हैं कि पञ्जाबी भाषा की उत्कृष्टता की यह पराकाष्ठा है। परन्तु इससे उसका इलहामी (ईश्वरीय वाक्य) होना सिद्ध नहीं होता, जब तक कि उसका विषय ऐसा न हो कि जिनके विद्या सम्बन्धी

विचार ईश्वर वाक्य कहाने के अधिकारी हों। हमारे बहुत से मित्र कहदेंगे कि वारिसशाह ने केवल एक ही अंश वर्णन किया है किन्तु क़ुरान में बहुत सी बातें ईश्वर का वाक्य कहाने योग्य हैं, जैसे मूर्ति पूजा निषेध और "एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म" का उपदेश। परन्तु ऐसे दोस्तों का कथन किसी प्रकार ठीक नहीं हो सकता प्रथम तो कुरान में बहुत सा भाग पुराने क़िस्सों से भरा है जिसको मुहम्मद साहब ने अपनी यात्रा में, जब कि वह नौकरी की अवस्था में शाम आदि ईसाई देशों में जाया करते थे सुना था। इस भाग का तो इलहाम से कोई सम्बन्ध ही नहीं होना चाहिये। दूसरे हिस्से में ऐसी आज्ञाएँ हैं जिनका सम्बन्ध केवल मुहम्मद साहब से है अर्थात् उनके ही लाभ की बातें हैं। जैसे जब मुहम्मद साहब को अत्यन्त दुःख पहुंचा। तब आयशा को कलंक से बचाने के लिये यह आयत मुसलमानों के कथनानुसार उतरी।

जिसकी चर्चा क़ुरान की मन्जिल ४ सिपारह १८ सूरतुल नऊर में आई है। इस वृत्तान्त को शाह अब्दुल

नोट—क़दर की रात में फ़रिश्तों का उतरना बतलाने से यह स्पष्ट है कि और रात मे फ़रिश्ते नहीं उतरते।

फ़ादर ने हाशिये पर लिखा है। देखो छापाखाना नवल-किशोर लखनऊ सटीक कुरान पृष्ठ ४५२ का हाशिया नं० २। इसके उपरान्त तूफ़ान (जल विप्लव) का वर्णन है जो हज़रत के समय में उठा था। हजरत आयशा पर यह कलंक लगाया गया था। पैग़म्बर एक दिन जहाद सेलौटे आ रहे थे। रात को कूच हुआ, नफ़ीरी और नगाड़ा साथ न था। मुसलमानों की माता (आयशा) शौच क गोई थीं। संयोगवश पीछे रह गई। एक मुसलमान लश्कर से पीछे चलता था जिसने उनको ऊँट पर सवार करा लिया। स्वयं ऊँट की नकेल पकड़ कर चलता था और लश्कर में आयशा को पहुंचा दिया काफ़िरों में एक मास तक इसका चर्चा रहा। पैग़म्बर भी सुनते रहे। बिना अनुसन्धान किये कुछ नहीं कहते परन्तु दिल में क्रुद्ध रहते थे। एक मास के उपरान्त जब मुसलमानों की मां (आयशा) ने सुना, उन्होंने बहुत दुःख माना। रोते २ दम न लिया। अल्ला ताला ने फिर यह आयतें भेजीं।

इसी प्रकार, मुहम्मद साहब ने अपने लेपालक बेटे ज़ैद की स्त्री ज़ैनब को ज़ैद के तलाक़ देने पर ले लिया जब लोगों ने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, तब बहुत सी आयतें उतारलीं जिससे प्रत्येक के चित्त में यह

विचार उत्पन्न होता है कि क़ुरान शरीफ़ भी मुहम्मद साहब की ही आज्ञाएँ हैं जो उन्होंने आवश्यकतानुसार मनुष्यों पर प्रकट कीं भला ऐसी बातों को, मूर्खों के अतिरिक्त कौन सत्य मान सकता है ? इसके अतिरिक्त इस बात की भी यहां आवश्यकता है कि यह बात भी जानी जावे कि ईश्वर वाक्य के लिये कौन से गुणों की आवश्यकता है ? जिसमें प्रत्येक मनुष्य उसकी परीक्षा कर सके क्योंकि बिना लक्षण के किसी प्रकार भी यह बात नहीं ज्ञान हो सकती कि यह किताब ईश्वरीय है वा किसी मनुष्य की घड़न्त है। इसलिए सबसे पूर्व इलहाम में ये गुण होने आवश्यकीय हैं कि उसके आशय वा अर्थों से ईश्वर की निन्दा न होती हो। दूसरी यह कि वह किताब अपने उतरने की आवश्यकता को बता सके। तीसरे यह कि सृष्टि के आरम्भ में हो। चौथे वह किसी देश की भाषा में न हो। पांचवें उसमें क़िस्से कहानी और घरेलू झगड़े जो किसी मनुष्य से सम्बन्ध रखते हों, न हों छटे उसमें कोई बात सृष्टि नियम और बुद्धि के विरुद्ध न हो। सातवें उसके विषयों में, जो उसमें वर्णन किये हों, परस्पर विरुद्ध बातें अकारण पुनरुक्ति दोष और सत्यता से विरोध न पाया जावे कम सेकम इन सात बातोंका इलहाम में होना जरूरी है

क्योंकि इलहामी किताबों में ईश्वर की मुहर तो लगी होता ही नहीं जिससे विदित हो जावे कि सचमुच इलहामी है। हमारे बहुत से मुसलमान मित्र कहेंगे कि वे लक्षण आपने इलहाम के कहां से किये? तो उसका उत्तर यह है कि ईश्वरीय नियम से इलहाम के लिये ऐसे ही लक्षणों की आवश्यकता है, क्योंकि ईश्वर के ज्ञान से मनुष्य उसके गुणों को जानकर उसकी उपासना कर सकता है। यदि ईश्वर की किताब में ही ईश्वर की निन्दा हो तो मनुष्य किस प्रकार ईश्वर के गुणों को जान कर उसकी उपासना करेगा? दूसरे जब कि बिना आवश्यकता के कोई बुद्धिमान भी कोई काम नहीं करता फिर ईश्वर जो सर्वज्ञ है, बिना आवश्यकता के कोई काम क्यों करने लगा है तीसरे यदि इलहाम का होना सृष्टि के आदि में न माना जावे तो इलहाम की आवश्यकता से इनकार करना पड़ेगा।

या ईश्वर पर अन्याय और अज्ञानता का दोष लगेगा जैसे कि प्रायः मनुष्य कहते हैं कि क्या कारण है कि ईश्वर ने आदम से लेकर मूसा तक मनुष्य के कल्याणार्थ कोई पुस्तक नहीं भेजी? यदि कहो कि कोई किताब थी तो उसको प्रस्तुत करना चाहिये अगर न थी तो दोष वैसा का वैसा ही है। उस किताब में क्या कमी थी जिस

को पूरा करनेको तौरेत उतरी और तौरेत से पूर्व संसार में कौनसा वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं था, जिसको तौरेतने बतलाया? और तौरेत के समय से पूर्व संसार मे कौनसी सत्य शिक्षा न थी जिसको ज़बूर ने पूरा किया और ज़बूर में कौनसी कमी रह गई थी जिसको इञ्जील ने पूरा किया? और तौरेत ज़बूर और इञ्जील में क्या दोष था जो उनको मनसूख किया गया। प्रायः लोग कह देते हैं कि इञ्जील आदि पुस्तकों में लोगों ने घटा बढ़ा दिया है, परन्तु उनका यह कथन नितान्त अयुक्त है। मुसलमानों को उचित है कि इञ्जील की वह पुस्तक जिसमें यह घटना बढ़ना विद्यमान है, उपस्थित करें और उन बढ़ाई हुई आयतोंको प्रकट करदें जबतक ऐसी पुस्तक का पता न लगजावे तबतक यह दावा निर्मूल है। अगर कोई कहे कि कुरान में भी यह दोष है तो मुसलमान लोग इस का प्रमाण मांगेंगे परंतु इञ्जील में न्यूनाधिकता का प्रमाण देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। यह किस प्रकार सम्भव है कि ईश्वरकी किताब में कोई मनुष्य कुछ मिला सके और उसका पता न मिलसके। आज तक ईश्वरीय वस्तुओं के साथ मानुषी वस्तुएँ मिल नहीं सकतीं। इसलिये इलहाम वही है जो सृष्टि के आरम्भ में होकर मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाता रहे। चौथी युक्ति,

कि वह किसी देश की भाषा में नहो, इसलिये है कि ईश्वर पर अन्याय का दोष न लगे क्योंकि जिस देश की भाषा में होगा, वहां के मनुष्य उसको सरलता से पढ़ सकेंगे दूसरे देशवासियों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रायः मौलवी लोग यह भी कहते हैं कि यदि किसी देश की भाषा में न हो तो लोग कैसे पढ़ सकेंगे? उसका उत्तर यह है कि प्रथम तो सृष्टि के आरम्भ में बहुत से देश भाषाओं का विभाग हो ही नहीं सकता, ईश्वर जिस पर ज्ञान प्रगट करता है वही उनको इलहाम और उसका ठीक २ अभिप्राय भी बताता है जिससे वह ऋषि उसका नियमानुसार प्रचार कर किसी देश में न होने से उसमें कोई कुछ बढ़ा भी नहीं सकता। पांचवें किस्से कहानी उसमें न हों। जो किताब सृष्टि के आदि से होगी, उसमें किस्से कहानी होना ही सम्भव नहीं और जिसमें किस्से कहानी होवे वह सृष्टि की आदि से न होगी, इसलिये ऐसी किताब ईश्वरीय कहाने के योग्य नहीं। इसका स्पष्ट आशय यह है कि मनुष्य बिना शिक्षा के अपने विचारों का प्रचार नहीं कर सकता, और बिना शिक्षा का बीज बोये विद्याकी परम्परा नहीं पड़ सकती, क्योंकि संसार में बिना कारण के कोई वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती, इसलिये शिक्षा

के बीज इलहाम का होना शिक्षा से प्रथम ही आवश्य-कीय है जिससे शिक्षा की प्रणाली बन जावे। जब एक बार शिक्षा प्रणाली बन गई फिर किसी इलहाम की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि आजतक कोई भी मनुष्य बीज नहीं बना सका हां बीज के द्वारा बीज उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य ईश्वर के ज्ञान में मिलावट नहीं कर सकता, और जिस में मिलावट हो जावे वह ईश्वर का ज्ञान नहीं। जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्य को मनुष्य की आंख की सहायता के लिये बनाया है। अब यदि कोई मनुष्य चाहे कि सूर्य में कुछ मिला दूं तो असम्भव है। परंतु सूर्य को मनुष्यों की आंखों की ओट में कर सकते हैं जो केवल आँख पर हाथ रखने से होसकता है यद्यपि प्रायः सूर्य मनु-ष्यों की आंखों से ओट हो जाता है, परन्तु उस समय परमात्मा नया सूर्य नहीं बनाते और न पिछले सूर्य को रद्दी करते हैं। निस्सन्देह मनुष्य के बनाए दीपक आदि की यह अवस्था अवश्य होती है कि वे सर्वदा बदलते रहते हैं। जब नए प्रकार का सुन्दर दीपक तैयार होजा-ता है तो पुराने और बुरे को रद्दी कर देते हैं।

जिस पुस्तक में मनुष्यों के घरेलू झगड़े और किस्से कहानी पाये जावें वह एक प्रकार का मनुष्यों का इति-

हास हो सकता है। उसको किसी प्रकार भी इलहाम नहीं कह सकते। छटे उसमें कोई बात सृष्टि नियम और प्रत्यक्ष के विरुद्ध न हो। इसलिये कि सृष्टि नियम ईश्वर का बनाया हुआ है अर्थात् वह ईश्वरीय कर्म है; और जो किताब इलहामी होगी वह उसका छाब होगी। नेक आदमियोंके कर्म वचन में अन्तर नहीं होता। जो मनुष्य कहे कुछ और जब करने का समय आवे तो करे कुछ तो उस को अच्छा आदमी नहीं कहते। ईश्वर जो सारी सत्यताओं का भण्डार है, उसके लिये तो ऐसा कहना सम्भव ही नहीं कि उसके कर्म और कथन में भेद है। एक अज्ञानी मनुष्य प्रायः अपनी स्मृति की न्यूनता के कारण अपनी बात को आप काटता है या एक बात को दुबारा कहता है जिसका कारण उसके ज्ञान और स्मृति की न्यूनता समझी जाती है परन्तु सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा नहीं कर सकता उसके वाक्य में अकारण पुनरुक्ति और परस्पर बिरोध नहीं हो सकता इसलिये जिस किताब में परस्पपर विरोध पाये जावें वह किसी प्रकार भी ईश्वर का ज्ञान नहीं होसकती। अब हम कुरान की भीतरी बातों से सिद्ध करते हैं कि कुरान में प्रत्येक प्रकार के दोष पाये जाते हैं जिससे वह खुदा का कलाम तो क्या किसी बुद्धिमान मनुष्य का भी नहीं होसकता।

पहिला गुण यह कि वह किताब ईश्वर की निन्दा न करती हो। हम जहां तक देखते हैं कुरानशरीफ़ के विषयों में ऐसे स्पष्ट शब्द विद्यमान हैं जिस से खुदा की निन्दा होती है देखो कुरान-मञ्ज़िल १ सिपारा २ सूरते बक़्र.—

मञ्जल्लज़ी युक्रे ज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनन् फयुज़्वायफ़ हू लहूअज़्वा आफ़न् कसीरतन् वल्ला हो यक़बिज़ो व यब सुतो वइलोहतुर्जऊन।

अर्थात्ः—कौन शख़्स है वह जो कर्ज़ा दे अल्लाह को कर्ज अच्छा पस दुगना करे उस को वास्ते उस के दुगना बहुत और अल्लाह वन्द करता है और कुशादः करता है और तरफ़ उस के फेरे जाओगे

अब देखिये! .कुरान .खुदा को भी ऋण की आवश्यकता वाला बताता है और ऐसी आवश्यकता प्रतीत होती है कि दुगुना देने की प्रतिज्ञा करता है आज कल का नियम यह है कि गवर्नमेन्ट तो चार पांच आने का ही सूद देती है और कोठी वाल बैंकर ॥) का सूद देते हैं और ग्रामीण पुरुष १॥) से ३=) तक का सूद देते हैं। ज्वारी लोग जिनका विश्वास बहुत कम होता है ~) फी रुपया सूद देते हैं न मालूम ऐसी आवश्यकता .कुरानी खुदा को क्या पड़ी है, कि लोगों में उसका इतना

अविश्वास बढ़ा है कि वह दुगना सूद देने की प्रतिज्ञा करता है और क़र्ज़ मांगता है, परन्तु फिर भी लोग उधार नहीं देते। इस का कारण कदाचित वह आयत हो जिस में खुदा को मक्र करने का दोष लगाया है, नहीं तो खुदा का इतना अविश्वास क्यों? देखो सूरत आल उमरान—

वंमकरू व मकरु अल्लाहो ख़ैरुल् माकरीन।

अर्थात मक्र किया उन्होंने (काफिरों ने) और मक्र किया अल्लाह ने अल्लाह बेहतर मक्र करने वाला है, पाठकगण! काफिरों ने जिस खुदा को त्याग रक्खा है, वह दफ़ा ४१७ ताजीरात हिन्द के अपराध का कर्त्ता होवे तो क्या आश्चर्य है? परन्तु जिस समय कुरानी .खुदा भी भजन करे तो उसका विश्वास कौन करे? इसीलिये तो वह बारम्बार ऋण मांगता है, परन्तु अविश्वास के कारण मनुष्य उसको देने के लिए तैयार नहीं होते देखो और स्थान पर भी खुदा को ऋण लेने की आवश्यकता पड़ी है देखो कुरान मंजिल ७ सिपारः २८ सूरतुल तगाबुन्—

"इन्तुक़रे ज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनैय ज़ुआइ फ़ुहो लकुम् व यग़फ़िर लकुम् वल्लाहो शकूरुन् हलीमू"

अर्थात् यदि ऋण दो अल्लाह को ऋण अच्छा, दुगना करेगा उसको वास्ते तुम्हारे, और बख़शेगा वास्ते तुम्हारे, और अल्लाह क़दरदान है अमल वाला।

पाठकगण! देखिये क़ुरानी ख़ुदा बारम्बार ऋण मांग रहा है और अविश्वास के कारण दुगना देने की प्रतिज्ञा करता है, परन्तु फिर भी ऋण देने को लोग तैयार नहीं हैं ज्ञात होता है कि लोग ख़ुदा के भक्त से डर कर उसको ऋण देने को तैयार नहीं हैं वर्ना इतने बड़े सूद पर ऋण क्यों नहीं मिलता! देखिये ख़ुदा और स्थल पर भी ऋण मांगता है-देखो क़ुरान सिपारः २७ सूरतुल हदीद मन्—

'ज़ल्लज़ी युक्रेजुल्लाह क़र्ज़न् हसनगन्
फ़युज्वायफ़ा हूलहू अजब आक़त् कसीरतन्"

अर्थात् कौन पुरुष है जो ऋण दे अल्लाह को ऋण अच्छा, पस दुगना करे उसके वास्ते उसके और वास्ते उसके सवाब व करामात। यद्यपि ख़ुदा ने दुगना देने और सवाब आदि बहुत सी चीज़ों के लालच दिये हैं। परन्तु मनुष्यों को इस पर विश्वास ही नहीं होता— विश्वास हो कैसे? जब की ख़ुदा अपनी बातों को तत्काल ही काट देता है! यदि उसकी कोई भी बात अटल होती तो उस पर विश्वास भी किया जाता। देखो

खु.दा मुसलमानों को लड़ाकर अपना राज्य स्थापित करना चाहता है इसके स्थान में अपने रसूल की सहायता स्वयं खु.दा करता, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् था, परन्तु बारम्बार क़र्ज़ मांगने और मुसलमानों को लड़ाकर लाभ उठाने और बात की सत्यता के लिए अनेक क़समें खाने से ज्ञात होता है कि न वह क़ादिर मुतलक़ (सर्वशक्तिमान्) है न वह सर्वज्ञ है, किन्तु उस का ज्ञान बहुत ही अल्प है। देखो खु.दा अपनी बात को आप ही काटता है देखो कु.रान सिपारः सूरऐ अनफाल—

"य अइयो हन्नवीयो हर्रे ज्विल् मोमीनीय अलल् क़िताले ईं यकुम् मिन् कुम् वेइशरूने स्वाबिरून् यग़लिबू में अतैने वईं यकुम् मिन् कुम् मे आलिम यग़लिबू अल्फ़म् मिनल्लज़ीन कफरूबे अन्नहुम् कौमुल् लायफ़् कहूना"।

अर्थात् ऐ नबी रगबत दिला मुसलमानों को ऊपर लड़ाई के अगर हों तुममें से बीस आदमी सब्र करने वाले ग़ालिब आवें दो सौ पर, और अगर होवें तुम में से ग़ालिब आवें एक हज़ार पर उन लोगों से कि काफ़िर हुए निस्बत इससे कि नहीं समझते। अब विचारिये कि कुरानी खुदा यहां मुसलमानों को मारकाट

की शिक्षा देता है और साथ ही यह वरदान भी देता है यदि तुममें से १०० मनुष्य होंगे और १००० पर विजयी होंगे। अब देखिये ख़ुदा का वरदान और प्रतिज्ञा कितनी शीघ्र असत्य होते हैं। देखो, क़ुरान—

"अल आनखफ़्फ़फ़ल्लाहो अ न् कुम् व अलेम अन्न फी कुम् ज़्वअफ़्मन् फ् इं यकुम मिन् कुम् मे अतुन् स्बीवरे त्विं यग़लेन् मे अतैने नइंयकुम् मिन् कुम् अल फुइं यग़लब अलफ़ैन् वेइज़्न् निल्लाहे वल्लाहो मे अस्सा बिरनि"।

अर्थात्–अब तख़्फ़ीफ़ की अल्लाह ने तुमसे, और जाना यह कि बीच तुम्हारे नातवानी है, पस अगर होवें तुममें से सौ सब्र करनेवाले ग़ालिब आवेंगे, दो सौ पर, अगर होवें तुम में से दो हज़ार ग़ालिब आवेंगे तुम में से दो हज़ार पर साथ हुक्म ख़ुदा के, और अल्लाह साथ सब्र करने वालों के है।

लीजिये ख़ुदा साहब की भी अज्ञानता प्रगट होगई। कि पहले तो दस के सामने एक को तैयार किया। जब देखा कि निर्बलता है, तो दो के मुक़ाबिले में एक को तैयार किया। प्रश्न तो यह उत्पन्न होता है कि जिस

समय कु़रानी खु़दाने पहिले दुआ दी थी कि "सौ होंगे तो हज़ार का मुक़ाबला कर सकोगे"। उस समय उसको इस बातका ज्ञान था या नहीं कि मुझे यह आज्ञा मनसूख़ करनी पड़ेगी? यदि कहो कि था तो फिर अपने ज्ञान के विरुद्ध ऐसा झूंठी दुआ क्यों दी? क्या उस समय उसको मुसलमानों की निर्बलता का ज्ञान नहीं था? जहां तक ज्ञात होता है खुदा को पहिले प्रतिज्ञा करते समय इस बात का ज्ञान नहीं था। यदि ज्ञान होता तो क्यों उसमें यह शक्ति न थी कि मुसलमानों की निर्बलता को दूर करके अपनी पहिली प्रतिज्ञा को पूरा करता? यदि कहो कि यह शक्ति थी, तो पहिले वायदे को क्यों मनसूख़ कर दिया? अगर कहो कि न थी, तो वह सर्वशक्तिमान् कैसे हो सकता है? हमने जितने कुरान के विषयों को पढ़ा हमने खुदा की निन्दा के अतिरिक्त खुदा का पूरा लक्षण कहीं भी नहीं पाया। बहुत से लोग कह देंगे कि कुरान ने खुदा की निंदा कहां पर की है? तो उनको ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिये कि सर्व स्वामी ईश्वर को ऋण का अभिलाषी बतलाना शुद्ध परब्रह्म को मक्कार (धूर्त) कहना और खुदा को अपनी प्रतिज्ञा को दस मिनट के उपरान्त मनसूख़ करने वाला बताना, निन्दा नहीं तो और क्या है? और भी कुरान में बहुत आयतें और विषय ऐसे हैं कि जिनमें खुदा की

निन्दा विद्यमान है परन्तु दिग्दर्शनमात्र कराकर दूसरे प्रकरण को आरम्भ करते हैं, क्योंकि लोग इतने ही से समझ जायेंगे कि कुरान ईश्वर की निंदा करनेवाला है। दूसरी बात यह है कि जब कुरान का उतारना बनाया जाता है; उस समय कुरान की आवश्यकता थी या नहीं! जहां तक विदित होता है कुरान में ऐसी कोई नई बात नहीं जो कुरान से पूर्व विद्यमान न हो हमने बहुत से मौलवियों से प्रश्न किये कि बतलाओ कुरान से पहिले कौनसा विद्यासम्बन्धी विचार न था जिसके बतलाने के लिए कुरान आया? बहुत से लोगों ने तो इस का उत्तर ही नहीं दिया। परन्तु एक दो मनुष्यों ने यह कहा कि वहदतुलकुल ज़ात वहदत सिफ़ात और वहदत फ़िल् इबादत अर्थात् एकमेवाद्वितीयंब्रह्म, नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। और तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति, ये कुरान से पहिले संसार में न थीं। यह इसलाम का कथन नितान्त असत्य है क्योंकि कुरान से पूर्व वहदतुलकुल ज़ात की शिक्षा उपनिषदों में विद्यमान थी। दूसरे श्री स्वामी शंकराचार्य जी महाराज, जो एक ही ब्रह्म के मानने वाले थे, मुहम्मद साहब से पूर्व हुए हैं उपनिषद की यह श्रुति कि 'एकमेवाद्वितीय-ब्रह्म" वहदतकुल ज़ात को सिद्ध करती है और उसका अनुवाद कलमे का पूर्वार्द्ध लाइला यिल्लिल्लाह है.

अर्थात् एक ही परब्रह्म है दूसरा नहीं। इसलिये जब कि ब्रह्म होने की शिक्षा प्रचलित थी तो कुरान के उतरने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि यह कहा जावे कि वहदानियत सिद्धान्त के लिये कोई कुरान की आवश्यकता थी तो यह भी असत्य है क्योंकि कुरान से बढ़कर यह शिक्षा उपनिषदों में विद्यमान थी जैसे "नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते"। यदि कहो कि वहदत-नियत इबादत के वास्ते कुरान आया तो भी असत्य है क्योंकि उपनिषद् वेद और गीता आदि सब ही ग्रन्थ एक ही ईश्वर को बतलाते हैं जो सबके सब कुरान से बहुत पहिले के हैं। यथा "तमेवविदित्वातिमृत्युमेति" आदि। इसके विरुद्ध कुरान, खुदा को वाहिद एक सिद्ध नहीं कर सकता। किन्तु उसके साथ काम करने में फरिश्तों की एक सेना विद्यमान है, इसीलिये उसका नाम "रब्बिलअफवाज" अर्थात फौजों का स्वामी भी है।

कोई काम नहीं, जो कुरानी खुदा अपनी शक्ति से कर सकता हो किन्तु प्रत्येक काम के लिये पृथक् २ फरिश्ते नियत हैं यहाँ तक कि कुरान के उतरने तक के लिए भी हज़रत जिबराईल से काम लेना पड़ा। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि हजरत जिबराईल तो, मुसलमानों के कथनानुसार, खुदा के पास जा ही नहीं सकते थे जैसा कि लिखा है 'अगर यकसरे मूए बरतर

परम्। फ़रोग़े तजल्ली बसोज़द परम्" अर्थात् यदि कुछ भी इससे आगे बढ़ूं तो खुदा का प्रकाश मेरे पर जलादे। जब जिबरईल खुदा तक पहुंच नहीं सकते थे तो जिबरईल तक खुदा का पैग़ाम कौन लाया ? यदि कहो वहाँ तक खुदा की क़ुदरत से आया तो क्यों कर खुदा के कामों में फरिश्तों और पैग़म्बरों को शरीक करते हो सीधे आर्य्य समाज की तरह मानो की ईश्वर सर्वत्र व्यापक है। यद्यपि वह अपनी शक्ति से सारे काम करता है। मुसलमान सारे कामों में फ़रिश्ते आदि को सम्मिलित करते हैं और रसूलों के खुदा के नाम तो उनके विश्वास की नीव (कल्मा) में सम्मिलित होगए हैं जो मनुष्य रसूल को न मानें वह मुसलमान नहीं हो सकता, और महत्व प्रकाश करने के लिए खुदा ने फरिश्तों को, आदम को सिज़दः करने की आज्ञा दी। जिन फरिश्तों ने आदम को सिज़दः किया वे सब नेक हो गये और जिन फरिश्तों के गुरू अज़ाजील ने आदम को सिज़दः करना पाप समझा, वह जानती (धिक्कारित) हुआ। अब सोचना चाहिये कि क़ुरान से वहदत फ़िल इबादत की शिक्षा कैसे मिल सकती है। जो ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे को दण्डवत् करने की आज्ञा दे वह १ सन्मार्ग से हटाने वाला होता है।

---

१ गुमराह

देखो कुरान सिपारह १४ सूरतुलहर—

"व लक़द ख़लक़नल् इन्सानं मिन् स्वल स्वालिम् मिन् हमं इम्मम् नून,,

अर्थात् और, अलबत्ता, तहक़ीक़ पैदा किया हमने आदमी को बजने वाली मट्टी से, जो बनी हुई थी कीचड़ सड़ी हुई से (यहाँ खुदा ने यह नहीं बताया कि सड़ी हुई कीचड़ को किस चीज़ से बनाया? क्योंकि मिट्टी और पानी से कीचड़ बनती है) कि कीचड़ से मिट्टी बनती है।

"वल् जान्न ख़लक़्नाहो मिन क़ब्लो मिन्नारिस्सुम.,

अर्थात् और जिन्नों को पैदा किया हमने उसके पहिले इससे आग लोनकी से इस आयत से पता चलता है कि फरिश्ते और जिन्न एक ही हैं क्योंकि जिन्नों को आग से पैदा किया है और फरिश्तों की उत्पत्ति का कहीं भी चर्चा नहीं किया है कि वे किस चीज़से बनाये गये?

वइज क़ाल रब्बक लिल् मलायकते इन्नी ख़ालेक़ुम बशरम मिन् स्वल् स्वालिम मिनहम् इस्मसनून।

अर्थात् और जब और कहा परवरदिगार तेरेने वास्ते फ़रिश्तों के तहक़ीक मैं पैदा करने वाला हूं आदमी को बजने वाली मिट्टी से जो बनी थी कीचड़ सड़ी हुई से

फ़इज़ा सव्वतहू व नफ़ख़्तो फ़ीहे मिन् रुही फ़क़ऊ लहू साजिदीन"

अर्थात्—पस जब दुरुस्त करूँ मैं उसको और फूँकूँ बीच उसके रूह अपनी से बस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदः करते हुये।

"फ़सजदल मलायकतो कुल्लहुम् अजमऊन इल्ला इबलीस ऐं यकूनमे अस्साजिदीन"

अर्थात्—पस सिजदः किया फरिश्तों ने सबने इकट्ठे, कहा ऐ इबलीस क्या है वास्ते तेरे यह कि न हुआ तू साथ सिजदः करने वालों के।

काललम् अकुल्ले असजुद लेबशरिन् खलक़्तहू मिन् स्वल्स्वालिम मिन् हमइम मसनून"

अर्थात् कहा कि मैं नहीं लायक़ इस बात के कि सिजदः करूँ वास्ते बशर के कि पैदा किया बजने वाली मिट्टी से कि बनी थी कीचड़ सड़ी हुई से।

क़ाले फ़ख़रुज मिन्हा फ़इन्नक रजीमुन व इन्ने अलैकल् लाअनत इला यौमद्दीन"

अर्थात् कहा पस निकल इसमें पस तहक़ीक तू रान्दः हुआ है, और तहक़ीक ऊपर तेरे लानत है दिन क़यामत तक।

"क़ाल रब्बे फ़अन्ज़िरनी इला यौमे युबअसून"

अर्थात् कहा ऐ परवरदिगार मेरे पस ढील दे मुझ को उस दिन तक कि जिन्दा किये जावें।

"काल फइन्नक मिलन मुनज्जरीन"

अर्थात् कहा बस तहकीक तू ढील दिये गयों से है।

'इलायौम मिल वकतिल मअलूम'।

अर्थात् तर्फ दिन वक्त मालूम के।

काल रब्बेबेमा अगवैतनी लउजईनन्न लहुम फिल अर्जे वलउगवेयन्न हुम् अजमईन इल्ला इबादक मिन हुमुल मुखलसीन"

अर्थात् कहा ऐ रब्ब मेरे ब सबब इसके कि गुमराह किया तूने मुझको अलबत्ता जीवन दूंगा मैं वास्ते उनके बीच जमीन के, और अलबत्तः गुमराह करूंगा मैं उन सबको। उपरोक्त सम्वाद से जो कुरानी खुदा और ब्रह्मवादियों में श्रेष्ठ अर्थात् शैतान के वीच स्पष्ट हुआ स्पष्ट प्रगट है कि कुरानी खुदा वास्तव में पाप फैलाकर सन्मार्ग भ्रष्ट करना चाहता था, परन्तु वेडर और सच्चे पुरुष कभी भी अपने धर्म से च्युत नहीं होते, इसलिए हजरत शैतान ब्रह्म वेत्ताओं में श्रेष्ठ (शैतान) एक मेव द्वितीय ब्रह्म का विश्वासी बना रहा और शेष सब फरिश्ते मनुष्य पूजक बन गये। पाठकगण! कुरान के कर्ता को इस कहानी लिखने से जो तात्पर्य है वह तो आप जान गये होंगे, परन्तु कुछ मित्रों को इस प्रकरण के लिखने

का अभिप्राय कदाचित् ज्ञात न हो, इसलिये हम भी संक्षेप से कहे देते हैं। यह परस्पर का संवाद केवल इस लिये लिखा गया है कि लोग पैग़म्बरों को आज्ञापालन मे इन्कार न करें, और यह न कहने लगें कि खुदा और मनुष्यों के मध्य में तुम कौन हो ? इसका पता इस्लाम के कलमे से भी मिल जाता है जिल हाखां है "मुहम्मदरसूलिल्लाह" क्या केवल मुहम्मद साहबही खुदा की ओर से भेजे हुए थे ? शेष जितने पैग़म्बर आये वे खुदा के भेजे हुये न थे ? मुहम्मदसाहब का कुल पैग़म्बरों को छोड़कर, यहां तक कि आदम को, जिसको, कुरान के कथनानुसार, फ़रिश्तों से सिज़दः कराया, नितान्त छोड़कर, केवल मुहम्मद साहब को रसूल बनाना स्पष्ट बता रहा है कि यह वाक्य कोई विशेष स्वार्थ रखने वाले मनुष्यों का है। इस कलाम से सिवाय मुहम्मद साहबका अपना स्वार्थ सिद्ध होने के और कोई आशय नहीं निकल सकता है। हमारे मित्र मौलवी साहबान प्रायः कह देते हैं कि यह लेख शिर्क को प्रगट नहीं करता किन्तु खुदा ने एक पुराना क़िस्सा वर्णन किया है। यदि इस किस्से का वर्णन एक स्थल पर होता तो हम दुर्जन संतोष के न्याय से मान भी लेते, परन्तु कुरान में इसकी चर्चा बहुत स्थानों पर आई है इससे स्पष्ट है कि कुरान के बनाने वाले की यह प्रबल इच्छा थी कि लोग इस

क़िस्से को भले प्रकार याद करलें जिससे रसूल की आज्ञाओंसे इन्कार करनेमें शैतान के समान लानती होने का भय लगा रहे। प्रथम ही इसका उल्लेख सूरतोबक़र में आया है यथा—

वइज क़ाल रब्बोक लिलमलायकते इन्नी जायलुन् फ़िल अर्ज़े खलीफ़ा काक अत जल फीहा मन् युफ़सदो फीहा वयुसफे कुद्दीमाश्च वन हनो सब्बेहो वेहमदेक वनुक़द्दसो लक क़ालइन्नी आलमो माला तआलमून्”

अर्थात् जब कहा परवरदिगार तेरे ने वास्ते फरिश्तों के तहक़ीक़ मैं बनाने वाला हु बीच ज़मीन के नायब, कहा उन्होंने क्या बनाता है बीच उसके उस शख़्स को कि फिसाद करें बीच उसके, और डालेगालहू, हमया कि बयान करते हैं साथ तारीफ तेरी के और बाकी बयान करने वास्ते तेरे। कहा तहकीक़ मैं जानता हुं।

व अल्लमा आदमल अस्माअ कुल्लहा सुम्मा अरदहुम् अलल् मलायक तें फक़ाल अम्बे ऊनी बे अस्माये हा उलाये इन्कुन्तु स्वादेक़ीन।

अर्थात् और सिखाये आदम को नाम सारे, और सामने किया उसको ऊपर फरिश्तों के और कहा उनको बताओ मुझको नाम उनके अगर हो तुम सच्चे।

"काल सुभानक लाइल्मा लना इल्ला मा अल्लम् तना इन्नक अन्तुल् अलीमुल् हकीम"।

अर्थात् कहा उन्होंने पाक है तू, नहीं इल्म हमको मगर जो कुछ सिखाया तूने हमको तहक़ीक़ तू है जानने वाला हिकमत वाला।

क़ाल या आदमो अम्बेहुम्बे अस्मागे हुम् फ़लम्मा अम्बाहुम् बे अस्मागेहिम, काल अलम अक़ुल्लम। इन्नी आलमो गैबमसा वातेवल अर्दै व आलमो मातुदूना वमा कुन्तुम वइज कुल्नालिल मलायकातिजुदूल आदम फ़सजदू इल्ला इबलीसा अबा।वस्तक बर वकान् मिन अलकाफ़रीन', ।

कहा ऐ आदम ! बताओ उनको नाम उनके पस जब बताये उनको नाम उनके। कहा क्या न कहा था मैंने तुमको तहक़ीक़ मैं जानता हूं छिपी चीजें आसमानी और ज़मीन की और जो जानता हूं जो ज़ाहिर करते हो और थे तुम छिपाते। और जब कहा हमने वास्ते फ़रिश्तों के सिज़दः करो वास्ते आदम के पस सिज़दः किया मगर शैतान ने न माना और तकब्बुर किया और था वह काफ़िरों से।

ऐ वहदत फ़िल ज़ात का दावा रखने वालो ! सोचो कि जो आदम को सिज्दः न करे वह काफ़िर है। जब कि खुदा नहीं मानने वाले भी काफ़िर हैं और

आदम को सिजदः न करने वाले भी काफिर थे तो क्या अब भी वहदत कि जात की डींग मारोगे ? यही विषय कुरान मंजिल २ सिपारः ७ सूरते रोश।

"वलक़द खलक़ना कुमसुम्म मव्वरन कुम् सुम्म् कलिलन् लिल मलायकतिस्सजु दू ले आदम फ़स-जदू इल्ला इबलीसा लम्यकून् मिनस्साजदीन"।

अर्थात् और अलबत्ता तहकीक पैदा किया हमने तुमको, फिर सूरतें बनाई हमने तुम्हारी फिर कहा हमने वास्ते फरिश्तों के सिजदः करो वास्ते आदम को सिजदः किया उन्हों ने, मगर इबलीस न हुआ सिजदः करने वालों में से—

"फ़ालमा मनआक़ अल्लाह तसजुद ज़ेआ मत्तीक क़ाल अन खैरुम्मिहो खलक तनी मिन्ना-रिन् व खलकतहू मिन्तीन।

अर्थात्—कहा किस चीज़ ने मना किया तुझको न सिजदः किया तूने जब हुक्म किया मैंने तुमको कहा मैं बेहतर हूं उससे पैदा किया तूने मुझको आगसे और पैदा किया उसको मिट्टी से—

"क़ाल फ़हृ बित् मिनहा फ़मा यकूनो लक अन्त तकब्बुरो फ़ीहा फ़ख़रुज इन्नक मिन् मस्सा-बिरीन्"

कहा पस उतरा उसमें से पस नहीं लायक वास्ते तेरे यह कि तकब्बुर करे तू बीच उसके बस निकल तह-कीक तू जलीलों से है।

"क़ालनज़ुर्नी इलायो मे युब् असून"

अर्थात्—कहा ढील दे मुझको कि उस दिन तककि कब्रों से उठाये जावें।

"क़ाल इन्नके मिनल् मुनज़रीन"

कहा तहकोक तू ढील दिये गयो में से है।

'क़ाल फ़बेमा लगवैतनी लाक़ादन्नलहुम् सिरातकल् मुस्तक़ीम्"

अथात् कहा पस कसम है उसकी गुमराह किया तने मुझको अलबत्तः बैठूँगा वास्ते उसके राह तेरी सीधी पर।

पाठकगण! इसी विषय को कुरान सिपारः २३ मंज़िल ६ सूरते स्वाद में भी कहा है—

इज़क़ाल रब्बोक लिल् मलायकतेइन्नी खाले-क़ुन् बशरम्मिन्तीन।

अर्थात्—जिस वक्त कहा परवरदिगार ने वास्ते फरिश्तों के तहकीक में पैदा करने वाला हूँ इन्सानों को मट्टी से।

"फ़इज़ा सव्वैतहू व नफ़खतो फ़ीहे मिर्रूही फ़क़ऊलहू साजदीन"।

अर्थात्--पस जिस समय दुरुस्त करूँ उसको और फुँकूँ बीच उसके रूह अपनी, ज़मीन में पस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदः करते हुए।

'फ़सजदल् मलायकतो कुल्लहुम् अजमऊन"

पस सिजदः किया फ़रिश्तों ने सब इकट्ठे।

"इल्ला इबलसि स्तकबर व कान मिनल् काफ़िरीन"

मगर इबलीस ने तकब्बुर किया और था काफ़िरों से।

पाठकगण! आगे वही विषय है जो पीछे तीन जगह दिखा चुके हैं। प्रथम तो इस पुनरुक्ति को, जो आदम को सिजदः के लिये है, देखकर कोई विद्वान् नहीं मान सकता कि क़ुरान एक ही ईश्वर की पूजा बताता है जब कि आदम को न सिजदः करने वाले काफ़िर हैं, मुहम्मद को रसूल न बनाने वाले काफ़िर हैं। कहां तक कहें बहुत सी वस्तु हैं जिनको क़ुरान ने ख़ुदा के साथ विश्वास में सम्मिलित करलिया है। हमने जहांतक पता लगाया है उससे यही परिणाम निकलता है कि क़ुरान केवल मुहम्मद साहब की आवश्यकता पूरा करने वाला वाक्य है। जब मुहम्मद साहब ने कोई ऐसा कर्म किया जिसके कारण पब्लिक ने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, झट मुहम्मद साहब ने एक आयत गढ़दी,

जैसा कि प्रायः कुरान में पाया जाता है। उसका एक उदाहरण हम प्रस्तुत करते हैं—हजरत मुहम्मद साहब ने जैद नामी एक मनुष्य को गोद ले लिया था, और उसका जैनब नामी एक सुन्दर स्त्री से विवाह भी कर दिया था। एक दिन हजरत जैनब के घर अचानक चले गये और जैनब को वेपरदा देख लिया। हजरत की तबियत भी आशिकमिजाज थी, जैसा उनका ?जीवन चरित्र पढ़ने से और सारे मुसलमानों के लिये चार स्त्रियां और अपने लिये उनसे अधिक करने से, विदित होता है। उन्होंने अन्दर पहुंचकर उसकी प्रशंसा की। जैनब ने जब यह हजरत का विचार जैद से कहा। जैद मुहम्मद साहब का सच्चा हितैषी था उसने झट जैनब को तलाक देदी और हजरत ने बिना निकाह उसको अपनी स्त्री बना लिया। जब लोगों में इस बातकी चर्चा उठी और हजरत की निन्दा होने लगी क्योंकि यह बात ही इस प्रकार की थी। एक तो लेपालक की स्त्री! दूसरे बिना निकाह उसको स्त्री बना लेना!! सर्व साधारण में हलचल क्यों न मचती? जब हजरत ने देखा कि लोग बहुत बदनाम करते हैं तो एक आयत उतार दी—देखो कुरान २२ वां पारः सूरत एहजाब—

वमकाने लेमोमिनिव् वलामोमिने तिन् इज़ाक़दल्लाहो वरसूलहू अमरन् एँ, यकून लहुमुल्

?हमारे यहाँ से मँगाकर देखिए चित्रित जीवन मूल्य ॥)।

खेयरतो मिन् अम्रेहिम् वमैं या सिल्लाहा वरसु-लहू फ़क़द्ज़ल्लाह दलालम् मोबीन्।

अर्थात् और नहीं है लायक़ वास्ते किसी मर्द मुस-लमान के और न औरत मुसलमान के जिस वक्त मुक़र्रिर करे खुदा और रसूल उसका कोई काम यह कि होवे वास्ते उनके इख्त्यार काम अपने से और जो कोई नाफ़रमानी करे अल्लाह की और रसूल उसके की पस तहक़ीक़ गुमराह हुआ गुमराही ज़ाहिर !

"वइज़तक़ूलोलिल्लज़ी अन्नमल्लाहो अलै-हेव अन अमत अलैहे अम्सिक् अलैक ज़ौज़क वऽक़िल्लाह वतुख़्फ़ी फ़ीनफ़सेकमल्लाहो मुब्-दीहेव तख़ शन्ना संवल्ला हो अहक्को अन्तख् शफ़लम्माक़द् ज़ैदुन्मिनहावतरन् जव्वज ना कहा ले कला यक़ून अललमोमिमीन हरजुन् की अज़-वाजे अदए या एहिन् इज़ा क़दौमिन् हुन्ना वत्र वकान अम् रुल्लालाहे मक़ूल"।

अर्थात् और जिस वक्त कि कहता था तू वास्ते उस शख्स के कि नियामत की है तू ने ऊपर उसके ऊपर ध्यान रख ऊपर अपनी बीबी को और डर खुदा से। और छिपाता था बीच जो अपने के जो कुछ अल्लाह ज़ाहिर करने वाला है और डरता था लोगों से और

अल्लाह बहुत लायक़ है उसका कि डरे तू उससे पस जब पूरी करी ज़ैदने उससे हाजित व्याह दिया हमने तुझ से उसको तू कि न होवे ऊपर ईमान वालों के नंगी बीच बीवियों के बालकों उनके के जब रफ़ा की उनसे हाजित और है हुक्म ख़ुदा किया गया ।

इसके हाशिये पर शाह अब्दुल क़ादर लिखते हैं- हज़रत ज़ैनब रसूल की फूफी की बेटी और क़ौम में अशराफ थी । हज़रत ने चाहा कि उनका निकाह करदें ज़ैद बिन हारिस से ये ज़ैद असल अरब के थे, पकड़ ज़ालिम लेगया था । शहर मक्के में उनको हज़रत ने मोल लेलिया । दस वर्ष की उम्र में इनके बाप भाई ख़बर पाकर मांगने को आये । हज़रत के देने पर यह घर जाने को राज़ी नहीं हुए और हज़रत से हुज्जत की। इसलाम से पहिले के रिवाज के मुआफ़िक़ हज़रत ने उसको बेटा बना लिया । हज़रत ज़ैनब और उनके भाई राज़ी न हुए । यह आयत उतारी और राज़ी हो-गये और निकाह कर दिया । और देखो हाशिया सुफ़ा ५२३ हज़रत ज़ैनब ज़ैद के निकाह में आई तो वह उनकी निगाह में हक़ीर जची मिज़ाज की मुआफ़िक़त में हुई तो लड़ाई हुई । ज़ैद हज़रत से आकर शिकायत करते और कहते थे कि इसे छोड़ता हूं । हज़रत मना

करते थे कि मेरी खातिर से तुझको क़ुबूल किया है। अब छोड़ना दूसरी ज़िल्लत है। जब बार बार कज़िया हुआ। हज़रत के दिल में आया कि अगर नाचार ज़ैद छोड़ देगा तो ज़ैनब की दिलजोई बग़ैर इसके नहीं कि मैं उससे निकाह करूँ। लेकिन मुनाफ़िक़ों की बदगोई से अन्देशा गया कि कहेंगे कि बेटे की जोरू घरमें रक्खी, हालांकि लेपालक को हुक्म बेटे का नहीं। किसी बात में अल्लाह ताला ने हज़रत ज़ैनब की खातिर रक्खी बाद तलाक़ के हज़रत के निकाह में देदिया। अल्लाह के फ़रमाने ही से निकाह बंध गया। ज़ाहिर में निकाह की हाजित नहीं हुई। जैसे अब कोई मालिक अपने लौंडी ग़ुलाम को बांध दे, ग़रज़ पूरी होने पर छोड़दे"।

पाठकगण! इस घटना को पूरे ध्यान से पढ़िये और शाह अबदुल क़ादिर के शब्दों को सोचिये तो क्या यह फल नहीं निकलता कि बिना निकाह मुहम्मद साहब ने अपने बेटे की जोरू को घर में रख लिया। शाह साहब का यह कहना था। दरअसिल 'लेपालक को हुक्म बेटे का नहीं" किस प्रकार ठीक मान लिया जावे? क्योंकि यदि हज़रत का गुप्त निकाह बंध जाने से पहिले ये आयतें उतरीं तो लोगों को यह विचार उत्पन्न होता कि मुहम्मद साहब ने जो कुछ किया ख़ुदा

की आज्ञा से किया। परन्तु यहां पर बिल्कुल ही उलटा मामला है, क्योंकि शादी पहिले हुई और आयतें बाद को उतरीं। ये सारी आयतें मुहम्मद साहब की इच्छा पूरी करने के अतिरिक्त और किसी काम की नहीं। खुदाने कहा और मुहम्मद साहब का निकाह बंधगया, इसका कोई प्रमाण शाह साहब ने नहीं दिया। यदि कोई मनुष्य निष्पक्ष होकर जिज्ञासु भाव से इन आयतों को पढ़ेगा, तो उसको अवश्य ही मानना पड़ेगा कि क़ुरान खुदा का वाक्य नहीं किन्तु मुहम्मद साहब का और कुछ उनकी प्रशंसा करने वालों की रचना है यहां पर इतने आक्षेप होते हैं—

१—खुदा ने मुहम्मद साहब का, लोगों के डरसे दिल में अपनी इच्छा अर्थात् ज़ैनब की शादी को छिपाना, प्रगट किया है। अब प्रश्न यह है कि जो मनुष्य पैग़म्बर का दावा करे और लोगों के भय से डरे, उसकी बात के सत्य होने का क्या प्रमाण है?

२—दूसरा प्रश्न यह है कि जब मुहम्मद साहब की इच्छानुसार खुदा ने ऐसा वाक्य भेजा था कि जिसके द्वारा ज़ैनब और उसका भाई, जो विवाह से असन्तुष्ट थे, सन्तुष्ट होगये, उस समय क़ुरानी खुदा को ज्ञात था या नहीं की ज़ैनब का जो मेरे वाक्य से सन्तुष्ट न होगा।

कहो कि खुदा जानता था कि उससे ज़ैनब को तसल्ली नहीं होगी, और वह ज़ैद को, पैग़म्बर और खुदा के समझाने पर तुच्छ समझी गई तो उसने क्यों हज़रत ज़ैनब से ज़ैद की शादी कराकर अपनी दया की भी निन्दा कराई ? यदि ये आयतें पहिले आतीं और बाद को मुहम्मद साहब ज़ैनब को घर में रखते तब तो कहा जा सकता था कि मुहम्मद साहब ने खुदाका हुक्म पूरा करने के लिये यह कर्म किया, लेकिन मुहम्मद साहब ने ज़ैनब को पहिले घर में डाला, जैसाकि मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र और इन आयतों से विदित होता है, इस जगह पर स्पष्ट कहना पड़ता है कि ये सब आयतें, मुहम्मदसाहब ने, उस बदनामी को जो उस घटना से सर्व साधारण कर रहे थे दूर करने के लिये, स्वयं बनाई, यदि खुदा की यह इच्छा होती कि लेपालक की स्त्रियों से विवाह न हो तो कर लिया जाये तो वह तौरत में जिसको मुसलमानों के कथनानुसार खुदा ने पहिले उतारा था, इस बात की आज्ञा देता कि लेपालक बेटे की स्त्री से विवाह करना बुरा"। इसके अतिरिक्त यदि मुहम्मद साहब उससे निकाह करते जो सारी बिरादरी में होता तो यह भी कहना कुछ उचित होता कि लेपालकों की स्त्रियों से विवाह कर लेने के

लिये ये आयतें उतरीं परन्तु मुहम्मद साहब ने तो बिना निकाह ही घर में डाललिया, इससे निकाह किसी प्रकार भी धर्मानुकूल नहीं होसकता, क्योंकि शरियत के अनुसार जो विवाह होता है प्रथम तो बहुत से मनुष्यों के सामने परस्पर की स्वीकारी होती है और क़ाज़ी निकाह पढ़ाता है। अब यहां न तो परस्पर की स्वीकारी का कोई प्रमाण मिलता है और न निकाह ही पढ़ा गया। यदि कहो कि निकाह खुदा ने पढ़ दिया, तो इसमें प्रमाण क्या? जिस समय हज़रत ने आयशा पर व्यभिचार का दोष लगाया उस समय २-४ गवाह मांग लिये। वास्तव में व्यभिचार चोरी आदि ऐसे कर्म हैं जो छुपकर ही किये जाते हैं, जिनके लिये चार साक्षियों की प्राप्ति बहुत ही दुस्तर है। परन्तु विवाह एक धार्मिक कर्म है जो सदैव जनसमूह के सामने होता है परन्तु दोनों समयों पर नितान्त नियम विरुद्ध कार्यवाही का होना अर्थात् व्यभिचार के लिये चार गवाहों को मांगना और निकाह को बिना गवाहों के ठीक समझना पक्षपातियों के अतिरिक्त और लोग कैसे उचित समझ सकते हैं?

वह क़ुरान मुहम्मद साहब का क़ानून है और उस की सारी ही बातों से वह स्वयं पृथक हैं। यदि खुदा का नियम होता तो कोई भी मनुष्य पृथक नहीं समझा

जा सकता। यह तो मुसलमान लोग भी मानेंगे कि मुहम्मद साहब के पास इलहाम लाते हुए फ़रिश्तों को किसी ने नहीं देखा किन्तु इलहाम प्रायः रात्रि को आया करते थे और स्वप्न की अवस्था में आते थे। जब कि सारी ही .क़ुरान की आज्ञाओं से मुहम्मद साहब पृथक हैं तो कौन बुद्धिमान मान सकता है, कि मुहम्मद साहब क्यों क़ुरान की आज्ञाओं से पृथक समझे गये! प्रमाण यह है कि प्रथम तो सारे ही मुसलमानों के लिये चार स्त्रियें विदित हुईं, परन्तु हज़रत इस आज्ञा से पृथक माने गये। दूसरे—सारे ही लोगों के बिना निकाह के किसी स्त्री को घर में डाल लेना विदित नहीं, परन्तु मुहम्मद साहब ने शरई निकाह के बिना ही ज़ैनब को डाल लिया तीसरे और लोगों की स्त्रियों को तलाक उपरांत विवाह कर लेना अधिकार है परन्तु मुहम्मद साहब की स्त्रियों को यह अधिकार नहीं था, किन्तु मुहम्मद साहब की स्त्रियों से निकाह करना क़ुरान में विदित नहीं बतलाया। हमारे बहुत से मुसलमान भाई कह देंगे कि हज़रत की स्त्रियों से औरों को निकाह करना इसलिये उचित नहीं कि वे सारे मुसलमानों की मां है कारण यह कि मुहम्मद साहब रसूल हैं। और मां के साथ किसी प्रकार भी निकाह

उचित नहीं। परन्तु उनका यह उत्तर ठीक नहीं, क्योंकि यदि हम मुहम्मद साहब को पैग़म्बर होने के कारण सारे मुसलमानों और मुसलमानियों का पिता समझ लें तो उनकी स्त्रियों को मां मानना पड़ेगा।

ऐसी अवस्था में कुल मुसलमानियें कन्या का समबन्ध रक्खेंगी क्योंकि पैग़म्बर होने के कारण हज़रत उनके बाप हैं। ऐसी अवस्था में वे किसी से भी विवाह नहीं करसकते। परन्तु कैसा अन्याय है कि वे अपनी स्त्रियों को दूसरे की स्त्री बनाने की लज्जा से बचने के लिये अपने को मुसलमानों का बाप समझें परन्तु मुसलमानियें बाप न समझें, क्या मुसलमानियें हजरत के संप्रदाय में नहीं हैं! यदि हैं तो किस प्रकार मुसलमान हजरत के बेटे हैं तो मुसलमानियें हज़रत की बेटियां हैं। यदि मां के साथ निकाह नाजायज़ है तो बेटी के साथ कहाँ ज़ायज है परन्तु हजरत तो कुरान की प्रत्येक आज्ञा से पृथक हैं उनके लिये कोई नियम नहीं? वह जो कुछ करलें उसके वास्ते आयतें तैयार मिलेंगी। शोक इस बात का है कि इतनी मोटी बात को भी मुसलमान लोग नहीं समझ पाते कि जब सारे मुसलमान हजरत के बेटे हैं तो मुसलमानियां बेटियां क्यों नहीं हुईं? फिर हजरत का किसी से निकाह कराना किस

प्रकार उचित है। इसके अतिरिक्त और भी प्रमाण मिलते हैं कि क़ुरान में जो कुछ लिखा गया है। वह सब हज़रत की इच्छा के अनुकूल लिखा गया है। एक दिन हज़रत की स्त्रियों ने कहा कि खुदा जो कुछ आज्ञा देता है वह मनुष्यों को देता है स्त्रियों के लिये कोई आज्ञा नहीं उसी समय हज़रत ने ये आयतें उतारीं अर्थात् रचीं देखो क़ुरान सिपारः २२ सूरतुल एहज़ाब।

या निसा अन्नबीये मैंयाते मिन् कुन्ना बें फ़ाहिशेतिम् मुबनिर्ती युज अफ़लहल् अजाबो दे़फ़ैन वकान जालेक अल्लाहे यसीरह्।

अर्थात्—हे बीबियो नबी की। जो कोई आवे तुम में से साथ बेहयाई ज़ाहिर के दोचन्द किया जावेगा। वास्ते उसके अजाब दो बराबर और हैं ये ऊपर अल्ला के आसान।

वमैं यक़नुत मिन् कुन्ना लिल्लाहे व रसूले-ही वत अमल सालहन् नोतेहा अजरहा मर्रतैन व आतदूनलाहा रिजक़न् करीम।

अर्थात्—और जो कोइ फरमाबरदारी करे तुममें से वास्ते अल्लाः के और रसूल उसके और अमल करे अच्छे, देवेंगे हम उसको सवाब उसका दो बार और किया वास्ते उसके हमने रिज़्क़ अच्छा। पाठकगण! इसीप्रकार

बहुत सी आयतें इस प्रकार की आगे लिखी हैं जिनमें स्त्रियों को और विशेषकर नबी की स्त्रियों को उपदेश किया है। इन सारी आयतों के देखने से पता मिलता है कि जिस समय मुहम्मद साहब को कोई आवश्यकता हुई झट उन्होंने खुदा के नाम से आयत उतार ली। बहुत से मुसलमान भाई हम से इसका प्रमाण मांगेंगे कि मुहम्मद साहब से स्त्रियों ने कब प्रश्न किया और मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतारलीं। इसके उत्तर में हम कहेंगे कि देखो कुरान पृष्ठ ५२२ हाशिया छापाखाना नवलकिशोर "हज़रत की एक स्त्री ने कहा था कि कुरान में सब ज़िक्र है मर्दों का, औरतों का कहीं नहीं उसपर यह आयत उतरी नेक औरतों की ख़ातिर को नहीं तो जो हुक्म मर्दों को कहा सो औरतों पर ले आए हरबार जुदा कहने की हाजत नहीं। इसके अतिरिक्त प्रायः लोग मुहम्मद साहब के घर आते और देर तक बात करते रहते जिससे हजरत को बहुत कष्ट होता। और वह उनको घरसे बाहर निकालना चाहते परन्तु संकोच से और असन्तुष्ट हो जाने के भय से कुछ नहीं कहते थे कि ऐसा न हो कि सम्प्रदाय में मत भेद हो जावे लोगों को अधिक देर तक बैठने से रोकने के लिए, मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतारीं अर्थात् गढ़ीं देखो कुरान सिपारः२२सूरतुलएहज़ाब

या अइ यो हल्लज़ीन आमनू लातदख़ुलू बयूतन्नबीये इल्ला ऐं योज़न लकुम इलाता आमिन् वलाकिन् इज़ादो ईतुम् फदख़ुलू फ़इजयं इम् तुम फ़न्तशेरू वकामुस्ता निसीना ले सदीस इन् ज़ाले कुम् कानलकुम् अन्तो जूरसलल्लाहे वला अन्तन् केदूहू अज़वाजेहु मिम्बादेही अबद इन्न जाले कुम् कान इन्दल्लाहे अज़ीम कान योज़िन् नबीयाफ़यस्त सहा मिन्कुम् वल्लाहो लायस्तहयी मिनल हक्के वइज़ा स अल् तो मूहुन्न मताअन् फ़सअलूहुन्न वराअ हिजाब ज़ालेकुम् अतहरो ले कुम् वकुलूबे हिन्ना वका।

अर्थात् अय लोगों जो ईमान लाये हो मत दाख़िल हो घरों में पैग़म्बरों के मगर यह अज़न् दिया जावे वास्ते तुम्हारे तर्फ़ खाने के बइन्तजार करने वास्ते पकते उसके वे लेकिन जब बुलाये जाओ तुम, पास दाख़िल हो, पस जब खा चुका हो बस मुतफ़र्रिक हो जावे और मत बैठे रहो जी लगा रहने वास्ते २ बातों के। तहक़ीक़ यह काम है ईज़ा देना नबी को। बस शरमाता है तुमसे और अल्लाह नहीं शरमाता हक़ बात से। और जिस वक्त मांगा चाहो उससे कुछ असबाब, पस मांगलो उनसे पीछे परदे के से। यह बहुत पाक करने वाला है वास्ते

दिलों तुम्हारे के और दिलों उनके के और नहीं लायक़ वास्ते तुम्हारे कि ईज़ा दो रसूल ख़ुदा को और न यहकि निकाह करो बीबियों उसकी से पीछे उसके। कहदे वहक़ीक़ ये हैं नजदीक अल्ला बड़ा गुनाह। प्रिय पाठक गण! उपरोक्त आयतों और मुहम्मद साहब के घरेलू झगड़ों के प्रकरण को देखने से आपको भले प्रकार विदित होजावेगा कि कुरानशरीफ सारे का सारा ही मुहम्मद साहब की उपयोगी बातों का संग्रह है। उसमें जहां कहीं ख़ुदा की उपासना का थोड़ा बहुत प्रसङ्ग आया है, वह इस बात के लिए कि लोग ये न करें कि मुहम्मद साहब ने सब कुछ अपने वास्ते गढ़ा है। जहां ख़ुदा का हुक्म मानना कहा है, वहीं उसके रसूल मुहम्मद साहब का हुक्म मानना कहा है यह तो प्रत्येक मनुष्य जानता है कि कुरानशरीफ़ के अतिरिक्त मुसलमान लोग किसी दूसरी किताब को सत्य नहीं मानते, इसलिये ख़ुदा के गौरव के स्थान में उसको अत्यन्त निर्बलता प्रतीत होती है। मानो वह एक पुतला है जो मुहम्मद साहब के इशारों पर नाच रहा है। हम स्वयं आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान भाई नित्य प्रति पढ़ने पर भी इस बात पर कभी विचार नहीं करते, कि जहां हज़रत की बीबी ने कहा ख़ुदा ने झट आयत नाज़िल करदी। जहां

मुहम्मद साहब लोगों के घर बैठे रहने से असन्तुष्ट हुए, झट आयतें उतरने लगीं। हमको इस बात पर अधिक वादविवाद करने की आवश्यकता नहीं है कि क़ुरानशरीफ़ मुहम्मद साहब की उपयोगी आज्ञाओं का संग्रह है जिसमें अरब के पोलिटिकल क़ानून का संग्रह भी सम्मिलित है अथवा पुरानी घटनायें इसमें लिखी हैं इसमें ईश्वरीय ज्ञान होने का कोई गुण नहीं है किन्तु एक इतिहास तो इसको कह सकते हैं हमारे इस लेख से कोई यह न समझे कि क़ुरानशरीफ में कोई बात भी अच्छी नहीं है किन्तु इसमें जितनी बातें अच्छी हैं वे नई नहीं हैं केवल पुरानी किताबों से ली हुई हैं। क़ुरान में किस्से कहानियों का भण्डार तो बहुत ही है। इसके अतिरिक्त क़ुरान में ऐसी बातें भी अधिकता से पाई जाती हैं कि जो सारी की सारी ही विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हैं, सत्यासत्य के निर्णय के लिए विद्या और बुद्धि के अतिरिक्त और क्या हो सकता है, अतः जो वाक्य विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हो उसके असत्य होने में कोई सन्देह नहीं। और जिस वाक्य में झूँठ हो वह ईश्वरीय वाक्य कभी भी नहीं हो सकता। हमारे मुसलमान मित्र हम से प्रश्न करेंगे ? कि क़ुरान में कौन सी बात विद्या और बुद्धि के विरुद्ध है प्रथम तो यह कि क़ुरान में आसमान के विषय में जो

कुछ लिखा है वह विद्या और बुद्धि के कितना विरुद्ध है एक स्थल पर तो क़ुरान में आकाश को बुर्जों वाला लिखा है! देखो क़ुरान सिपारः ३० सूरतअल बुरूज—

"वस्समाएजातिल् बुरूजे"

अर्थात्—क़सम है आसमान बुर्जों वाले की। दूसरी जगह आकाश को छत के समान कहा है। यथा देखो-क़ुरान सिपारः १ सूरतुल बक़र—

"अल्लजी जाअललकुमुल् अर्द फ़िराशऊँ वस्समाअ माअन् वअंजल मिनस्समाए फ़अख़रुज्बे ही मिनस्समराते रिजक़ल्ल कुम् फ़लाते तजअलू लिल्लाहे अन्दादन व अन्तम् ताल् मून्"

अर्थात्-जिनके किया वास्ते तुम्हारे ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत और उतारा आसमान से पानी, पस निकला साथ उसके फ़ूलों से रिजक़ वास्ते तुम्हारे, बस, मुक़र्रिर करो अल्लाह के बराबर तुम जानते हो।

तीसरी जगह आसमान को जालीदार बतलाया है, और कहीं आसमान की खाल उतारना लिखा है। देखो सिपारः ३० सूरत।

"वइअस्समऊन् शक्क़त"

अर्थात्-और जिस वक्त आसमान की खाल उतारी

जावेगी। और कहीं पर आसमान का फटजाना लिखा है। देखो क़ुरान सिपारह ३० सूरतुल।

"वइजस्समऊन्"

अर्थात् जिस वक्त आसमान फट जावे। और कहीं पर आसमान का खोलना है। देखो कुरान सिपारह २६ सूरतुल।

"फ़इजन्नजूमों तशतत्"

बस जिस वक्त कि तारे मिटाये जावेंगे। और "वइ जस्समारा फुरेजत" और जिस वक्त आसमान खोला जावे। पाठकगण! कुरान में आकाश के विषय में भिन्न भिन्न प्रकार से बातें लिखी हैं, परंतु आकाश क्या वस्तु है यह कहीं पर भी नहीं लिखा। जितने फ़िलासफ़र आजतक हुए हैं वे आकाश के होने से इनकार करते हैं क्योंकि उसके अर्थ शून्य के हैं। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या आकाश कोई सजीव शरीरधारी वस्तु है? जिसको खाल उतारी जावेगी, खाल तो सजीवों के ऊपर हुआ करती है। यदि कहो आकाश कोई सजीव चेतन वस्तु है तो वह जालीदार और बहुत बुर्जों वाला कैसे हो सकता है? क्योंकि ये तो सब निर्जीव वस्तुओं में हो सकता है। यदि जीव रहित है तो उसकी खाल उतारने से क्या आशय? हमारे मुसलमान भाई कहेंगे

कि तुम मनुष्य की विद्या का परमेश्वर की विद्या से मिलान करते हो इसका उत्तर यह है कि अभी तो यह बात साध्य कोटि में है कि क़ुरान ईश्वरीय पुस्तक है वा नहीं। जब तक मुसलमान लोग क़ुरान को विद्या और बुद्धि पूर्वक ईश्वरीय वाक्य सिद्ध न करदें तब तक उनके केवल कथनमात्र से,क़ुरान ईश्वरीयवाक्य सिद्ध नहीं होगा अबतक जितने भी नियम ईश्वरीय ज्ञान के लिये नियत किये गए हैं, उनमें से क़ुरान में एक भी विद्यमान नहीं। हां क़ुरान में प्रतिज्ञायें तो बहुत की गई हैं परन्तु उनको सिद्ध करने के लिए कोई भी विद्या और बुद्धि पूर्व हेतु युक्ति नहीं दीगई। हां सौगन्धें (क़समें) तो बहुत खाई हैं जो उसके मनुष्यकृत होने का पूरा प्रमाण है। यदि क़ुरानी ख़ुदा सर्वशक्तिमान होता तो प्रत्येक मनुष्य के चित्त में क़ुरान की विद्या का प्रवेश कर देता, परन्तु क़ुरानी ख़ुदा तो मुसलमानों को लड़ाकर अपना शासन जमाना चाहता है, या इधर उधर से ऋण लेकर दिन काट रहा है। उसमें अपने वाक्य को विद्या और बुद्धि के अनुसार सच्चा सिद्ध करने की शक्ति नहीं। यही कारण है कि अपनी बात को सच्ची सिद्ध करने के लिए सौगन्धें खाता है या मुसलमानों को भड़काकर तलवार के द्वारा उनको सच्चा ठहरवाता है, भला

ऐसे मनुष्य को जो अपने कथन को विद्या और बुद्धि से सिद्ध न करके, और न लोगों को कोई बुद्धि की बात बताये हां केवल क़समों से और तलवार से सच्चा सिद्ध करना चाहे, कोई बुद्धिमान् मनुष्य उसको ईश्वर कहने को तैयार नहीं हो गा। ईश्वर में वह शक्ति है कि बिना खाए वा कठोरता किए ही अपने वाक्य की सत्यता प्रत्येक में स्थिर कर सकता है। जैसे कि वेदों के प्रकाशक परमात्मा ने अपना ज्ञान संसारी मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित किया। अब जो लोग उसको खोज करते हैं वे उसकी विद्या के विषय की गम्भीरता को जान लेते हैं उसको ईश्वरीय ज्ञान मानने के लिए तैयार होजाते हैं। कारण इसका यह है कि वेदों की शिक्षा को प्रकाशित हुए एक अरब सत्तानवे करोड़ वर्ष बीत जाने पर भी, आज तक उसमें घटाने बढ़ाने की आवश्यकता नहीं हुई। परन्तु मनुष्य कृत पुस्तकें तौरेत, ज़बूर, इञ्जील और क़ुरान ३४ सौ साल में इसलाम के कथनानुसार, तीन तो कलाम मंसूख होगए और क़ुरान की भी बहुत सी आयतें जैसे पूर्व तो १० काफ़िरों से एक मुसलमान का मुक़ाबला कराया, फिर उसको मंसूख करके दो के मुक़ाबले में एक को ला जमाया मंसूख हो गई। मानों पहिली आज्ञा तोड़ दी गई। अब

इस अपूर्ण कथन को, जिसमें न तो ठीक ठीक जीवात्माके गुण का पता मिलता है और न ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव हो भले प्रकार बताए गए हैं, और नहीं यह बताया कि मनुष्य किस प्रकार मुक्ति प्राप्त कर सकता है, और न सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने का कोई उपाय बताया गया है। ऐसा पुस्तक बिना सोचे समझे कैसे ईश्वरीय पुस्तक मान ली जावे ? क़ुरान की आज्ञाओं में एक दूसरे का खण्डन पाया जाता है पहिले तो यह कैसा कि जिधर चाहो उधर ही मुँह करके नमाज़ पढ़ो, फिर उसका खण्डन करके यह कि काबे की ओर को पढ़ो अन्त में यह कहना पड़ता है कि जिस गुण का होना ईश्वरीय ज्ञान में आवश्यक है, वह क़ुरान के भीतर नहीं पाया जाता। हम आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान मित्र बिना सोचे विचारे क्यों इसको इलहामी किताब मान बैठे ?

परन्तु जब उस समय को याद किया जाता है जब इस क़ुरान का प्रचार अरब देश में हुआ तो चित्त को कुछ शान्ति होती है कि ऐसे लोगों में किसी किताब को इलहामी सिद्ध करदेना कौनसी बड़ी बात है। क्योंकि आज कल के चलते पुरज़े भी मूर्खों में अपनी प्रतिष्ठा जमाही लेते हैं। जिनको निश्चय नहीं वे मिरज़ा ग़ुलाम

अहमद क़ादयानी को देखलें कि इस प्रकाश के समय भी बहुत सी बातें झूँठी होने पर भी, मुसलमानों के पैग़म्बर बन ही बैठे थे। जिस प्रकार मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी के कारण उनके सहायक ऊमर और अली आदि हुए, उसी प्रकार मिरज़ा जी के भी सहायक मौलवी नूरुद्दीन आदि होगये जो मिरज़ाजी के मरण के उपरान्त गद्दी के अधिकारी बने। जब कि ऐसे प्रकाश के समय में भी मिरज़ा साहब इस्लामी पैग़म्बर बनगये तो उस अन्धेरे समय में और अरब जैसे मूर्ख देश में जहाँ उस समय विद्या के सूर्य के प्रकाश का चिन्ह तक न था, मुहम्मद साहब जैसे समयानुभवी और उच्च कुलोत्पन्न मनुष्य को जो अपने समय के सब से उत्तम ललित भाषी थे, पैग़म्बर होजाना कौनसी बड़ी बात है? जब मुसलमानों का एक बड़ा समूह लूट मार के कारण मुसलमान होगया, तो अन्य देश बलात् (जबरन) मुसलमान बनाये गये इसलाम तलवार का मज़हब है, उसमें विद्या और बुद्धि का कुछ भी काम नहीं बहुत लोग कहेंगे कि अरबी भाषा में तो बहुत सी विद्याएँ पायी जाती हैं, फिर अरब वालों को मूर्ख समझना कौनसी बुद्धिमानी है। परन्तु हमारे उन मित्रों को ध्यान रखना चाहिये कि इस समय जो अरब में पुस्तकें पाई जाती हैं वे मुहम्मद साहब के उप-

रान्त दूसरी भाषाओं से अनुवाद होकर अरबी में सम्मि-लित हुई हैं। मुहम्मद साहब से पूर्व अरब देश की बहुत ही बुरी अवस्था थी। लगभग सारे के सारे ही निवासी मूर्त्तिपूजक थे। और भी बहुत से मिथ्या विश्वास रखते थे, यहाँ तक कि मुहम्मद साहब के पिता ही स्वयं मूर्त्तिपूजक थे और मक्के के मन्दिर के पुजारी थे, और मक्का उस समय सारे देश की मूर्त्ति पूजा का अड्डा था अन्ध विश्वास तो इतना फैला हुआ था कि जिनका प्रमाण क़ुरान के प्रत्येक पृष्ठ से मिलता है। जिन, भूत और फरिश्तों के विषय में जो क़ुरान में लिखा है, उस से समझा जासकता है कि उस समय अरब देशकी क्या अवस्था थी।

देखो क़ुरान सिपारह २२ सूरते फातिर—

"अल हम्द लिल्लाहे फ़ातिरिस्समावाते वल अर्ज़े जाइलिल मलायकतेही रुसुलन उली अजनि ह तिम् मस ना व सुलास व रुबाअ"।

अर्थात् सब तारीफ़ हैं वास्ते अल्लाह के मैं पैदा करने वाला आसमान और ज़मीनों का करने वाला फ़रिश्तों को पैग़ाम लाने वाला, बाज़ू वाले दो दो तीन तीन और चार चार। इसके हाशिये पर अबदुल क़ादर साहब फ़रमाते हैं कि जिबराईल के छः सौ पर हैं। मानों

क़ुरानी फ़रिश्ते परन्द हैं। मनुष्य नहीं। परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि छः सौ पर वाला जिबराईल फ़रिश्ता मुसलमानों के सामने मुहम्मद साहब के पास वही लाता रहा परन्तु किसी मुसलमान ने उसको न देखा, मानो सारे के सारे ही मुसलमान ऐसी मोटी वस्तु को नहीं देख सके, तो आवागमन और जीव प्रकृति के अनादित्व जैसे सूक्ष्म विषय को कैसे जान सकते हैं, फ़रिश्तों के पक्षी होने का खण्डन इस बात से होता है कि जंग उहुद में जो क़ुरानी ख़ुदा ने मुहम्मद साहब को फरिश्तों की फौज सहायता के लिये भेजी थी, उसमें फरिश्ते घोड़ों पर सवार थे,। परिन्दों को सवारी की कोई आवश्यकता नहीं होती, इसलिये यों तो फरिश्तों के पर होना असत्य ठहरते हैं, या उनका घोड़ों की सवारी पर आना सिद्ध नहीं होता। सब से अधिक शोक की बात यह है कि क़ुरानी ख़ुदा ने क़ुरान के इलहामी होनेमें कोई ऐसी युक्ति नहीं दी कि जिससे क़ुरान का इलहामी होना सिद्ध हो। प्रायः यह कहा है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी सूरत बना लाओ। अब विचार करने से यह विदित नहीं होता कि क़ुरानी ख़ुदा का किस सूरत से आशय है? कौनसी सूरत के अनुसार फ़साअत चाहता है? या उसके विद्या सम्बन्धी विषय की तुलना चाहता है।

क्योंकि क़ुरान में केवल ऐसा लिखा है—देखो क़ुरान सिपारः २ सूरत बक़र—

"यइन् कुन्तुम्फ़ी रौबीम्मिम नज्जल्न अला अबादिन फ़तू बिसूरतिम्मिस्ले ही वदऊ शुहदअकुम् मिन्दू निल्लाहे इम् कुन्तुम् स्वादिक़ीन"।

अर्थात् और अगर हो तुम बीच शक के उस चीज से कि उतारा हमने ऊपर बन्दे के अपने, पस ले आओ एक सूरत मानिन्द उसकी के और पुकारो शाहिदों अपनी को वास्ते अल्लाह के अगर हो तुम सच्चे। इस आयत से इस बात का कुछ पता नहीं मिलता कि क़ुरानी ख़ुदा किस सूरत की तुलना की आयत व सूरत बनवाना चाहता है। और किस गुण की तुलना कराना चाहता है। यदि इस बात को खोल दिया होता तो आज तक सैकड़ों किताबें क़ुरान से अच्छी दिखलाई जातीं परन्तु यह वाक्य इस प्रकार का है जिससे कोई परिणाम नहीं निकलता कि यदि मुसलमान कहैं कि क़ुरान के समान फ़साहत (लालित्य) किसी किताब में नहीं है तो कालीदास और शैक्सपियर के नाटक और नाविल, और वारिसशाह का हीरा रांझा पढ़ना चाहिये तुलसीदास जी की रामायण जितनी फ़सीह है उसके समान तो क़ुरान में फ़साहत नहीं

दीखती। परन्तु कठिनता तो यह है कि हमारे मुसल्मान मित्र संस्कृत विद्या से अनभिज्ञ हैं, नहीं तो .क़ुरान से अधिक फ़सीह पुस्तकें संस्कृत में उनको दीख पड़तीं। यदि कहें कि अरबी भाषा में नहीं तो फ़ैज़ी का बेनुक़त .क़ुरान देखें, परन्तु केवल अरबी भाषा की फ़साहत इलहामी होने का हेतु नहीं। विदित होता है कि अरबी भाषा के .क़ुरान की फसाहत का दावा केवल अरब वालों के लिये ही किया गया है नहीं तो संसार में इससे अधिक फ़सीह पुस्तकें विद्यमान हैं। अगर .क़ुरान .ख़ुदा का बनाया हुआ होता तो अरब वालों के ही लिये नहीं कहता कि ऐसी सूरत बना लाओ, किन्तु दूसरे देश वासियों से भी तुलना करने के लिए कहता। यदि यह कहा जावे कि "मज़मून की खूबी" के विषय में परीक्षा करने के लिये "दावा" किया गया है तो बहुत से लोग यह कहते हैं कि यह दावा केवल सूरते फ़ातिहा के लिये है, क्योंकि ऐसा मज़मून दुनिया की किसी किताब में नहीं है।

परन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं क्योंकि प्रथम तो जो कुछ कथन है .क़ुरान के कर्त्ता का नहीं किन्तु यह सारा का सारा प्रकरण यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्रों का आशय रूप है जो ईशोपनिषद्‌ के नाम से

प्रसिद्ध है, जिसका १उर्दू अनुवाद भी छप चुका है यदि आप लोग पढ़ें तो पता लग जायगा कि क़ुरान ईश्वर के विषय में कुछ भी नहीं जानता, यदि वेदों में यह विषय न होता तो क़ुरान इतने से भी कोरा रहता।

वेद, क़ुरान, इञ्जील, ज़बूर और तौरेत से सिद्ध हो चुका है, इस लिये वह मज़मून जो पहिले से ही वेद में विद्यमान हो, क़ुरान के कर्त्ता का नहीं हो सकता अतः वह इलहामी भी नहीं हो सकता।

क़ुरान में कोई ऐसा विषय नहीं जो क़ुरान से पूर्व विद्यमान नहीं इसको छोड़कर कि "मुहम्मद साहब ख़ुदा के रसूल हैं और इसलिये इसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिये"। और स्त्रियों की कलह और झञ्झट को छोड कर सब कुछ किस्से कहानी तौरेत, ज़ुबूर और इञ्जील में विद्यमान है वहीं से सबके सब लिये गये हैं, परन्तु तौरेत ज़ुबूर और क़ुरान के क़िस्सों में परस्पर बहुत विरोध है। हम बड़े आश्चर्य में हैं कि ख़ुदा ने जो कुछ तौरेत में कहा है वह सत्य है वा क़ुरान का कहा सत्य है हमारे मुसलमान मित्र कहेंगे कि जब ये सारी किताबें क़ुरान के आने से मंसूख़ होगई तो उनकी तुलना क़ुरान से किस प्रकार हो सकती है ?

---

१ हमारे पुस्तकालय में उर्दू हिन्दी उपनिषद मिलेंगे।

क़ुरान प्रचलित नियम है, और तौरेत आदि मन्सूख़ हुये नियम हैं।

परन्तु प्रश्न तो यह है कि क़ानून मंसूख़ हो सकते हैं वा ऐतिहासिक घटनायें भी मंसूख़ हो जाया करती हैं इसबात को सब मानते हैं प्रत्येक मनुष्य अपनी आज्ञाको बदल सकताहै परन्तु किसी घटना के विषय में जिसमें उसने साक्षी दी हो, इन्कार नहीं कर सकता जब तक वह सिद्ध न करदे कि साक्षी देते समय पागल था। इससे यह सिद्ध होता है कि या तो वह झूठा है उसने पहले सत्य लिखवाया था, परन्तु अब उसने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये दूसरा झूंठा बयान लिखवाया है।

परन्तु नये बयान से पिछला बयान झूंठा सिद्ध नहीं हो सकता। यदि हमारे मुसलमान मित्र ज़रा भी न्याय पर कटिबद्ध हो जावें तो दुनिया से वह अन्धकार जो असत्य विचारों से फैल रहा है सारे का सारा हो दूर होजावे। यद्यपि अरब देश की अस्त व्यस्त और अस्थायी जातियों को इसलाम से कुछ लाभ पहुंचा हो परन्तु और देशों के लिये तो अत्यन्त ही हानि कारक हुआ है। और कुछ नहीं तो झगड़ा तो होता ही रहेगा। परन्तु मुसलमानों को यह तो विचारना चाहिये कि क़ुरान ख़ुदा को एक देशी बताता है, और

एक देशी ईश्वर हो नहीं सकता। क़ुरान छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति बतलाता है और सातवें दिन खुदा को अर्श पर बिठाता है। कहीं पर 'कुन' कहने से दुनियां की उत्पत्ति बताता है। चाहे सर्व साधारण इसको एक तुच्छ बात समझें विद्वान लोग इसको विद्या के विरुद्ध समझते हैं, और खुदा को भी सातवें दिन विश्राम की आवश्यकता होने से विकारी सिद्ध कर दिया।

इसके अतिरिक्त क़ुरान ने यह नहीं दिखलाया कि उन छः दिनों में प्रथम दिन क्या बनाया यदि कहो ये बातें तौरेत में आ चुकी हैं। यह किस्सा वहीं से ले लेना चाहिये। तो तौरेतमें अर्श पर चढ़ने की चर्चा नहीं है, और क़ुरान में है। ये बात कोई खुदा की आज्ञा नहीं जो कि मनसूख हो गई हो किन्तु यह तो एक घटना का वर्णन है इसमें विरोध होना दोनों में से एक को झूठा सिद्ध करना है। दूसरे इञ्जील वालों का सबूत (विश्राम का दिन) रविवार है, परन्तु क़ुरान के मानने वाले विश्राम का दिन शुक्र (जुमा) ठहराते हैं। अब प्रश्न यह है कि दोनों में से ठीक २ विश्राम का दिन कौन सा है? अन्यतः प्रत्येक घटनामें, जो क़ुरान ने पुरानी किताबों से ली है, कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है, जिससे सिद्ध होता है कि क़ुरान के कर्त्ता ने जो पुराने क़िस्से सुने थे वे सब लिख दिये और अपनी

योग्यता जतलाने को कुछ बातों में भेद भी कर दिया परन्तु यह न सोचा कि दो विरुद्ध बातें सत्य नहीं हो सकतीं, प्रत्युत उस समय सत्य हो सकती हैं कि जब उस के साथी एक सा ही वर्णन करें।

जहांतक खोज की गई वहांतक यही सिद्ध हुआ कि न तो क़ुरान की आवश्यकता ही प्रतीत हुई और न उसमें इलहामी होने के गुण ही पाये जाते हैं। केवल मुसलमान भाइयों ने पहिले तो तलवार और लालच से स्वीकार किया है। क्योंकि मुहम्मद साहब के जीवन से और उस लूट मार का बांट के झगड़ों के देखने से, जो मुहम्मद साहब के समय में हुए इस बात का पूरा पता मिलता है कि उस समय जितने लोग लूट मार के वास्ते मुसलमान हुए उसका दशवां भाग भी तो धर्म के तत्व को जान कर नहीं हुए।

अब बहुत काल तक मुसलमानी मत में रहने से हमारे मुसलमान भाइयों को ऐसा पक्षपात ने जकड़ लिया है कि क़ुरान और पैग़म्बरों की सिद्धि के लिए खुदा तक पर दोषारोपण करने को तैयार हैं। यहां तक कि क़ुरान में जो क़ुरान के कर्त्ता ने हज़ारों क़समें खाई हैं और क़ुरान की सच्चाई को सिद्ध करने का यत्न किया है उन कसमों के खाने का भी दोष परमेश्वर के पवित्र नाम

पर लगा दिया । और यह नहीं सोचा कि जिस खुदा ने सूर्य की उत्पत्ति और उसके प्रकाश का ज्ञान बिना किसी क़सम खाए कर दिया, जिसने मृत्यु का भय प्रत्येक प्राणी के चित में उत्पन्न करके उनके अभिमान को तोड़ दिया, जिसकी शक्ति के आधीन रहकर प्रत्येक परमाणु अपना २ कार्य कर रहा है, ऐसे सर्व शक्तिमान् को अपने कथन को सत्यता के लिए क़समें खाने की आवश्यकता होगी, अपने कथन को सत्यता को संसारी मनुष्यों में न जमा सकता । उसको मुसलमानों को लड़ाकर अपना काम चलाना पड़ा । सर्व स्वामी को ऋण लेने की आवश्यकता बतलाने वाला क्या बुद्धिमान हो सकता है ? खुदा पर "मक्र" का दोष लगाना । यहां तक कि वह कौन से दोष हैं जो कुरान ने खुदा पर न लगाए इसलिए मुसलमान मित्रो ! यदि सचमुच एक खुदा की उपासना का विचार रखते हो, यह मुख्य उद्देश्य है कि वे मनुष्य पूरा और मनुष्यघात के भंडार से हाथ उठाकर, और बुद्धि में जो मनुष्य के सुधार के लिए दी है सत्यधर्म का ग्रहण करें ।

सद्धर्म का सम्बन्ध, केवल मनुष्यों की आत्मा हृदय और ईश्वर से है उसमें किसी दूसरे मनुष्य की सहायता की आवश्यकता नहीं । उसमें किसी सांसारिक वस्तु

की आवश्यकता है हज्ज आदि की जितनी बातें हैं वे सब मनुष्यों के बनाए ढकोसले हैं ईश्वर सब जगह और सब ओर विद्यमान है जहां सच्चे जी से उसकी उपासना होगी वहीं कृत कृत्यता होगी। झूंठे दिलसे पैग़म्बर को मानकर काबे की ओर बैठकर नमाज़ पढ़ने से कोई लाभ न होगा यदि ईश्वर की सृष्टि के साथ सद व्यवहार किया जावे और उसके दिल को हाथ में लिया जावे तो उससे जितना पुण्य होता है वह जहाद के करने से, जिससे संसार नष्ट होता है, लाख जगह अच्छा है। जबकि खुदा ने ही उन के दिल पर मुहर करदी हो तो आपके कह देने से और जहाद के करने से वे किस प्रकार धर्मात्मा बन सकते हैं। क़ुरान के अनुसार मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है और जो कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं, किस प्रकार पुण्य और पाप का भागी हो सकता है। देखो क़ुरान सिपारह १ सूरतुल बक़र।

'इन्नल्लजीन कफ़रूसवाऊन् अलैहिम् अअन्ज़र तहुम अम् लम् तुम् ज़िर हुम्ल योमिनून"

अर्थात्—तहक़ीक़ जो लोग कि काफ़िर हुए बराबर है ऊपर उनके क्या डराया तूने उनको और क्या न डराया तूने उनको नहीं ईमान लावेंगे।

"खत मल्लाहो कुलूबे हिम् व अला समे-अहिम् व अब्स्वारेहिम् गिशावः व लहुम् अजाबुन अज़ीम।"

अर्थात् मुहर की अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके के और ऊपर कानों उनके और ऊपर आँखों उनके के परदह है, और वास्ते उनके अज़ाब है बड़ा हे मुसल-मानों! जरा विचारो कि जिन को खु़दा ने काफ़िर बनाया और उनके दिल पर खु़दा ने मुहर करदी अब वह किस प्रकार कुफ्र को छोड़ सकता है? क्योंकि उनका तो अपने दिलपर कोई अधिकार ही नहीं जैसा खु़दा ने बना दिया है बस बन गये। यदि वे स्वतन्त्र होकर कुफ्र करते तो किसी प्रकार दोषी भी हो सकते थे, परन्तु खुदा ने उनको काफ़िर बनाया स्वयं ही मुहर भी लगा दी, स्वयं ही उनके मारने की आज्ञा मुसलमानों को देदी। क्या कोई न्यायप्रिय इसको खुदा का कलाम मान सकता है? कभी नहीं। ईश्वर ऐसा अन्यायी नहीं कि स्वयं ही मनुष्यों को कुकर्म करने के लिये मनुष्य के हृदय को बुरा बनादे और स्वयं ही दण्ड दे। आज कल जितने मनुष्य धर्म भ्रष्ट हैं, कुरान की इस आयत के अनुसार तो उनहें खुदा ने बनाया है! देखो कु़रानी खुदा लोगों से ठट्टा भी करता है! देखो कुरान सिपारः १ सूरतुल बक़र—

अल्ला ईसमान् बिअसम व मदाईय मम अलनिसारहम यई समून

अर्थात्—अल्लाः ठट्ठा करता है उनको और खैंचता है उनको बीच सरकशी उनकी के। प्रिय मित्रगण! क़ुरान के उपरोक्त लेख से आपको विदित होगया होगा कि क़ुरान ऐसे मनुष्य का कथन है कि जो ठट्ठा करता है मक्र करता है, ऋण मांगता है, क़समें खाता है, प्रतिज्ञा करता है, मुसलमानों को लड़ाकर लाभ उठाता है और पशु पक्षी आदि और मनुष्यों को मार डालने की आज्ञा देता है। ऐसे को हमारे मुसलमान भाई खुदा समझें तो उनकी इच्छा है मृत्यु सर पर सवार है, संसार की सारी वस्तु अनित्य हैं केवल धर्म ही काम आने वाला है यदि हम अपनी अज्ञानता से इस धर्म पथ से भटक गये तो हमसे अधिक अभागा कौन होगा? उठो प्यारे मुसलमान भाइयो! सोचो, विचारो विद्या और बुद्धि से सत्यासत्यकी खोज करो। परमात्मा के नित्य नियम की जांच करो, उनके अनुकूल चलने के लिये संसारी रुकावटों का भय मत करो। सत्यता परमात्मा को प्यारी है। दयालु उसका नाम है। पस और सत्यता मनुष्य की उन्नति का कारण है। धर्म से

मनुष्यों को यदि हानि पहुँचे तो वह धर्म मनुष्य का बनाया हुआ है।

ईश्वर की आज्ञा वही है जिसमें सारे प्राणियों पर दया हो। दूसरों को दुःख देकर स्वयं अपना पालन करना मनुष्यता से गिराने वाला कर्म है। ईश्वर सर्व व्यापक और सर्वान्तर्यामी है, उसको सभा में न साक्षियों की आवश्यकता है न वहीखाते की, किन्तु सारा भेद स्वयं ही जानता है। इसलिये उसके कामों में किसी मनुष्य को या फरिश्ते को सम्मिलित करना उचित नहीं है वह अपनी शक्ति और स्वभाव से न्यायकर्त्ता और दयालु है। उसके कार्य्य में हस्तात्तेप करना पाप है। न वह क्रूर है न वह क्रोधी है; किन्तु न्यायमूर्त्ति है। उसके आश्रय से मनुष्य अपने अभीष्ट को सिद्ध कर सकता है। किसी संसारी मनुष्य को उद्धारक बनना ईश्वर के न्याय का नाश करना है जो असम्भव है।

इति शम्॥

हमारे यहां की छपी पुस्तकें।

१॥) न्याय दर्शन
१) सांख्य दर्शन
१॥) वैशेषिक दर्शन
३) योग दर्शन
२) अष्टोपनिषद्
१।) वैदिक विवाह आदर्श
१) वैदिक धर्म और इस्लाम
।॥) आर्य्यपर्वावली यानी त्योहार पद्धती दूसरा भाग
।।।) आर्य्य पर्व पद्धती प्रथम भाग
।॥) विचित्र जीवन मोहम्मद साहिबके घरका कच्चा चिट्ठा
॥) मोहम्मद साहिब जीवन चरित्र
॥) शुद्ध नामावली
१) श्री कृष्ण जीवन चरित्र
१।) बाला बोधनी ४ भाग
॥) बाल सत्यार्थ प्रकाश
।-) बाल मनुस्मृति
=) धर्म शिक्षा प्रथम भाग
।) धर्म शिक्षा द्वि०
=) पैलाम बिगुल

।-) यवनमत परीक्षा
=)॥ स्वर्ग में सबजेक्ट कमेटी
।) स्वर्ग में महासभा
=) प्राचीनोपनयन पद्धती
।) पुराण परीक्षा
=) आर्य्य हिन्दू नमस्ते का अनुसन्धान
१।) देश दिवाकर
॥) मेरी जेल यात्रा
१ योगिराज श्रीकृष्ण
=) भीष्म पितामह
॥=) बेंजमिन फ्रेंकलिन
=॥ श्रद्धानन्द सरस्वती
≡) हकीकत राय धर्मी
-) हिन्दुओं की छाती पर जहरीली छुरी
≡) चंचल कुमारी
॥) सन्तान शिक्षक
।) घरेलू चिकित्सा
॥) सीता चरित्र छुटा भाग
≡) भोंदू जाट एक डाक्टर पादरी साहिब का मुबाहसा
१॥) ध्यान योग प्रकाश

वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद।

खीजिये ! शीघ्रता कीजिये !! जल्द ग्राहक बनिये !!!

शङ्कर साप्ताहिक पत्र-

जल्द मँगाइये सम्पादक पं० नरदेवशास्त्री

मूल्य ३॥) सालाना।

इस पत्र में सामाजि राजनैतिकक उत्तम लेख व कवितायें और देश विदेशों के ताजे समाचार किसानों और व्योपारियों के सम्बन्ध में भी बहुत कुछ मसाला रहता है। स्त्रियों के लिये शङ्कर मुख्यपत्र है। जो हमारे यहां की छपी पुस्तकें एक दम ७) की ख़रीदेंगे उनको शङ्कर साल भर तक मुफ्त दिया जायगा।

मैनेजर शङ्कर—

वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद।